Vol. 1, Issue . 1 / February 2011, pp.56-58

Research Paper - Hindi

केदारनाथ अग्रवाल की कविता : विविध आयाम

– डॉ. अमोल पालकर
समाजशास्त्र विभाग,
सोलापूर

केदारनाथ अग्रवाल प्रगतिवाद के प्रमुख कवि रहेहै। उन्होंने प्रेम, प्रकृति एवं सामाजिक चेतना की कविताएँ लिखी है। उनकी कविताओं में जीवन का यथार्थ चित्रण और समाजवाद अथवा मार्क्सवाद की प्रमुखता दिखाई देती है। वेमानव में अदम्य आस्था रखनेवाले तथा शोषित जनता के पक्षधर है। उनके 'नींद के बादल' (१९४७), 'युग की गंगा '१९४७, 'लोक और आलोक '(१९५७), 'फूल नही रंग बोलते हैं(१९६५)', 'आग का आईना '(१९७०), 'हे मेरी तुम'(१९८१), 'कहें केदार खरी-खरी'(१९९३),'जमुन जल तुम'(१९८४) तथा 'जोशिलाएँ तोडते है।'(१९८६)प्रमुख काव्य संग्रह है। कविता उनके व्यक्तित्व का एक अंग बन चुकी है। अत: इसमें अभिव्यक्ति की अत्यंत सहजता है। कवि लिखते है - ''कविता न मैंने पाई, न चुराई इसे मैंनेज जीवन जोतकर, किसान की तरह बोया और काटा है। यह मेरी अपनी है और हमें प्राण से अधिक प्यारी है। किन्तु मैने इसे कपाट और कोठेकी बंदिनी बनाकर अपने अहं की चेरी के रुप में नही रखा। मैंनं कविता को सरिता के रुप में जनता तक पहुँचाया है।''

कवि केदार का काव्य साहित्यिक तत्वों के साथ-साथ लोकजीवन की विशेषताओं सेभी व्यक्त रहा है। समाज में व्याप्त विषमता का शोध कर उन्होंने उन रहस्यों को उद्‌घाटीत किया है। उनके काव्य में कई विशेषताएँ दिखाई देती है, जो इसप्रकार है-

सामाजिक विषमता:

इस संबंध में उनक 'दो जीवन ' कविता विशेष महत्वपूर्ण है जिसमें 'कली' और 'बबूल' क्रमश: शोषक अथवा धनी एवं संपन्न वर्ग के तथा शोषित अथवा गरीब वर्ग के प्रतीक के रुप में प्रयुक्त हुए है। 'कली ' निगाह में पलती है परंतु गरम हवा के झोंकों से मुरझा जाती है। मात्र 'बबूल ' अपने आप पलता है और निडर होकर कठीण जीवन का सामना करता है। न जलता है, न मरता है। कवि को दीप-हीन लोगों की आर्थिक विपन्नावस्था ने विचलित कर दिया था। वे लिखते है-''मैंने देखा है नग्न नृत्य, पापों से बोझिल धर्म-कृत्य

भूखी आत्माओं का विलाप, पागल कुतों का सा प्रलाप।''[२]

उनकी कविताओं में किसानों का गीत और उनकी वेदना व्याप्त है। किसान और गरीब उनकी कविताओं का केंद्र रहे है।

पूँजीवाद का विरोध:

केदारनाथ संपूर्ण मानवता का नवरुपान्तरण चाहते है। उन्हें लगता है मानव की सुख समृध्दी का साम्यवादी युग निकट आ रहा है। सोवियत रुस को ध्यान में रखकर और मार्क्स की कल्पना सेउनका हृदय पुलकित होजाता है। मानवता कोनष्ट करने वाले शोषक कवि केा हरे खेत में सुअर जैसे लगते है। मजदूर दिनभर मेहनत करते है, पत्थर लोहेसे लडते है, अपनी रोटी कमाते है और शोषक ,पूँजी पति उनकी मेहनत की पूँजी से अपने बँक

भरते रहते है. जिस पर कवि के मन में भयंकर क्रोध है।

'' आग लगे इस रामराजज्य मे
ढोलक मढती है अमीर की
चमडी बजती है गरीब की
खून बहा है राम - राज मै

रोटी रुठी, कौर छिना है
थाली सूनी, अन्न बिना है
पेंट धँसा है राम राज में ।''[३]

'महकती जिंदगी', 'हेमेरी तुम' आदि कविताओं में भी पूजीपतियों के प्रति यह क्रोध भावना तीव्रता से दिखाई देती है। 'पत्रावली' और 'पतझर' कविता में प्रतीकात्मक रुप से पूँजी पतियों के अंत की इच्छा प्रकट हुई है।

राष्टीयता :-

केदारनाथ अग्रवाल नेराष्ट्रीयता की भावना से ओत प्रोत काव्य भी लिखे हैं। मात्र इसमे समसामायिक परिस्थितीयों की विडंबना ही अधिक मुखर हुई है। कवि ने मिथ्या स्वप्निल जगत् की अपेक्षा देश के यथार्थ चित्र को अधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होंने देखा शासन के अधिकारी नेता डायर की वर्द पहनेहैं। सत्य और अहिंसा के अवतारी हिंसा का रुप धारण कर रह है। ऐसे अवसर पर मुस्कान सेया शान सेशासन बदलेगा नहीं। अत: वेक्रांति का आव्हान करते हैं।

''सारी जनवादी ताकत कोआगेबढ लोहा लेना है,
हायर की वर्द नेता सेहर लेनी है,
अंग्रेजी पिस्तौल छीनकर,
उसके हाथों मेटेसू की फूली लाल छडी देना है।
चंदन की शीतल खुशबू सेमन हरना है।''

कवि को काँग्रेस का राज उस खेत के समान लगता है जोबीज कोखाता है, उगता कुछ नहीं। जनता काँग्रेस के राज से हताश थी।

४. प्रभावी व्यंग्यात्मकता :

केदारनाथ के व्यंग्य बाण अत्यंत तीक्ष्ण हैं। जीवन की विकृतियों को उन्होंने इसके माध्यम से प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त किया है। धार्मिक - रुढियों पर कचि का व्यंग्य तीखा है। 'चित्रकुट के यात्री ' कविता में अपवत्र मन से ईश्वर की प्राप्ती नहीं हो सकती इसे व्यंग्यात्मक ढंग से कवि ने स्पष्ट किया है। आजकल हो रहे नैतिक पतन और रिश्वत खोरी पर भी वे करारा व्यंग्य करते है, जैसे-

''स्वर्ग हो गया है वेतन का बचाना
उपर की आमदनी का पैसा खाना
ज्यास से ज्यादा नाजायज कमाना
तरह और तरकीब से पकड में न आना
क्या खूब है जमाना ॥''

वर्तमान शिक्षा प्रणाली तथा पवित्रता, नेता की यात्रा, भाषणबाजी और भ्रष्टाचार पर भी कवि ने तीखा व्यंग्य कसा है। डॉ सोफिया मैथ्यु लिखती है'' उनकी कविताओं की विशेषता तीखा व्यंग्य है। यद्यपि केदार ने समाज के प्राय: सभी पहलुओं पर विचार किया है, फिर भी आपकी कविताओं में पूंजीपतियों पर आक्रोश ओर राजनीतिक व्यंग्य ज्यादा मुखरित हुआ है।''[६]

नवगीत :-

आधुनिक गीत जिसेनवगीत कहा जाता है, इस गीत की सभी विशेषताएँ केदारनाथ के गीतों में सहज उपलब्ध हैं। इसमें कहीं पर खिंच-तान नहीं है। प्रयोगों के लिए प्रयोग किया है ऐसा ही नहीं है तो सजगता से चित्रण है। जैसे-

''उसके वेनयन जोकिशोर है
रुप के विभोर जोचकोर हैं ऐसा कुछ
आज मुझेआ गयेकि बावरा बना गए
आह। मुझे प्यार की पुकार से।''[७]

केदारनाथ नेनवगीत का प्रयोग कर प्रगति को संपन्न तथा रुचिकर बनाया। उनके गीतों में ताजगी भरी हुई है।

भाषा :–

केदारनाथ नेसरल और व्यापहारिक भाषा में लोकजीवन के तत्वों का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में एक ओर लोक मंगलकारी तत्व है तोदुसरी और पाखंडियों का पर्दाफाश । उनकी भाषा जन साधारण के बोलचाल की भाषा है। भाषा में गीतों को पढते समय चित्रात्मकता निर्माण करनेका सामर्थ्य है। लोक शब्दों का सार्थक प्रयोग उनकी भाषा का आंतरिक गुण है। इस संदर्भ में डॉ. छोटेलाल दीक्षित लिखते है '' केदार की काव्य - भाषा जनभाषा के अधिक निकट है क्योंकि इनका कथ्य मध्यवर्गीय मानसिकता से अभभूत नहीं है। उन्होंने प्राणहीन जनभाषा के कुछ शब्दों का प्रयोग करके जनता सेजुडने का प्रयास नहीं किया है। उनके काव्य के यथार्थ की बनावट ऐसी है, उनका कथ्य जनता से इतना अभिन्न है कि इसके कारण जनभाषा की शब्दावली स्वयं प्राणवान होगई है।''[८] उन्होंने मुक्त छंद और गीति छंद का प्रयोग बडी सरलता सेकिया है। उनके बिंबो और उपमाओं मेनवीनता दिखाई देती है। कवि की अभिव्यक्ति का माध्य प्रगीत है।

निष्कर्ष :–

कवि केदारनाथ अग्रवाल संपूर्ण मानवता के भविष्य के प्रति आशावादी है। सामाजिक विषमता के कारण वे व्याकूल होकर लिखते है। उनकी कविताओं मेपूजीपतियों का विराध तथा किसान, मजदूरों के प्रति सहानुभूति की भावना है। वे भारत से साम्यवाद की कामना करते है। उनके गीतों में राष्ट्रीयता तथा क्रांति की भावना कूट - कूटकर भरर हुई है। व्यंग्य निर्मिती में कवि सिध्दहस्त हैं। सहज शैली में ताजगी - भरेनवगीत कविता को रोच बनाते है। केदारनाथ की भाषा जनसाधारण की बोलचाल की भाषा होने के कारण विशेष अपनापन महसूस होता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

- केदारनाथ अग्रवाल, लोक और अलोक - भूमिका से, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं.१९५७. पृ. ४
- केदारनाथ अग्रवाल, युग की गंगा, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. १९४७. पृ. २०
- केदारनाथ अग्रवाल, कहें केदार खरी-खरी, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. १९८३. पृ. ८१
- वहीं, पृ. १०१
- केदारनाथ अग्रवाल, आग का आईना, परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. १९७०. पृ.८१
- डॉ. सोफिया मैथ्यु, स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता मे सामाजिक चेतना, सूर्य भारती प्रकाशन, प्रथम सं. १९९६. पृ. १९८-१९९
- केदारनाथ अग्रवाल, फूल नहीं रंग बोलतेहै , परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम सं. १९६५. पृ. ८०
- डॉ. छोटेलाल दीक्षित, आधुनिक काव्य में सोन्दर्य - बोध के विविध आयाम, शबरी संस्थान, दिल्ली, प्रथम सं. १९८९ पृ. १४०